

## **Cours 4: D'Éphèse à Chalcédoine Ruptures et trahisons.**

Année scolaire 2015-2016

---

---

---

---

---

---

---

### **I- La Paix armée (433-435)**

---

---

---

---

---

---

---

### **II- La théologie antiochienne en Arménie, et sa remise en cause (avant 430)**

- Vers 387, le royaume de Grande-Arménie est divisé
- Conciles de Séleucie-Ctésiphon 410 et 424
- Théodore de Mopsueste avant sa mort (428) a été en relation avec Mesrop Machtot's
- *Vie de Mesrop Machtot's* écrite par Korioun vers 443

---

---

---

---

---

---

---

### III- L'Église arménienne dans la querelle christologique (431-438)

■ Cf. Corpus « Proclus et le dossier christologique arménien »

---

---

---

---

---

---

---

### IV- L'offensive des Cyrilliens (435-448) et une nouvelle crise autour de la pensée d'Eutychès

A - L'offensive des Cyrilliens (435-448)  
 B- La nouvelle crise et l'affirmation de la pensée d'Eutychès  
     Eutychès ou Eutukhès, † 454.  
 C- Le concile d'Éphèse ou « brigandage d'Éphèse » (449)  
     Dioscore, successeur de Cyrille d'Alexandrie

---

---

---

---

---

---

---

### V- Le concile de Chalcédoine (451)

---

---

---

---

---

---

---

## VI- La réception de Chalcédoine

Opposition d'Alexandrie  
Opposition d'Antioche

- Timothée Aelure
- Séleucie-Ctésiphon

---

---

---

---

---

---

---

## Les positions des empereurs :

- Léon Ier (457-474)
- Basiliscus (474-475) cf. texte d'*Encyclique*
- Zénon (476-491), cf. texte de l'*Hénotique*
- Anastase (491-518)
- Justin et Justinien (518-565)

---

---

---

---

---

---

---

## VII- La fin du Ve siècle arménien (438-490)

- A- la succession de Sahak
- B- l'Avarayr, 451
- C- Giut et Yovhannes Mandakouni

---

---

---

---

---

---

---